मोहयाल मित्र

रायज़ादा बी.डी. बाली और श्रीमती नीता बाली को बधाई

जनरल मोहयाल सभा की ओर से रायज़ादा बी.डी. बाली और श्रीमती नीता बाली के विवाह की वर्षगांठ 8 मार्च को मनाई गई। मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों और पदाधिकारियों ने उन्हें बधाई दी। इस अवसर पर उन्होंने केक काटा और एक–दूसरे को जयमाला पहनाई।

रायज़ादा बी.डी. बाली और श्रीमती नीता बाली ने सबका आभार प्रकट किया। इस अवसर पर उनकी ओर से प्रीति–भोज दिया गया।

जन्मदिन मुबारक

अपने पति कर्नल आर.एस. बक्शी के जन्मदिन की खुशी में 500 रुपए मोहयाल सभा हरिद्वार को भेज रही हूँ। 19 फरवरी को इनका जन्मदिन है। मैं अपने पति के बारे में संक्षेप में कुछ बताना चाहती हूँ। इनका बचपन पंजाब के एक छोटे से शहर कपूरथला के पंजाबी मौहल्ले में गुज़रा। उनके मन में एक लगन थी कि आर्मी में आफिसर बनना है, कहते हैं कि इन्सान जब हिम्मत कर के कर्म करता है तो उसकी मदद भगवान भी करता है। एन.सी.सी. में प्रवेश लेने के बाद इन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते गए। आर्मी में कमीशन लेने के बाद इन के हौसले बुलंद होते गए। कभी एनसीसी की यूनिट कमांड करते तो कभी श्रीलंका में जाकर आई.पी.के.एफ. में कमांड की। आखिर पोस्टिंग पूना में मिली और रिटायर्ड होने से एक दिन पहले अपने बड़े बेटे कैप्टन विक्रम की शादी कर दी।

कर्नल आर.एस. बक्शी

कैप्टन विक्रम बक्शी

जिंदगी का दूसरी पारी शुरू की, एक छोट सी फैक्ट्री खोल कर जिसका नाम 'हिन्दुस्तान ऑटोमेशन' रखा। यहाँ पर भी अपनी मेहनत और लगन से उद्योग अवार्ड प्राप्त किया। छोटा बेटा जो एक इंजीनियर है, उसे अपने साथ रखा, जिसने फैक्ट्री को आगे बढ़ाने में अपने पापा की कंधे से कंधा मिलाकर मदद की और कर रहा है।

अब जिन्दगी की तीसरी पारी शुरू हो गई है। बच्चे अपने अपने घर खुश है। ईश्वर से अब और कुछ नहीं चाहिए। भगवान इनको तंदुरस्थ और खुशियाँ प्रदान करें।–*सरिता बख्शी, मो. 9881551057*

मैहता शिवकुमार भीमवाल जी का 96वां जन्मदिन

मैहता शिवकुमार भीमवाल जी का जन्म दिनांक 25.01.1919 को स्व. श्री नरनारायण भीमवाल जी एवं स्व. श्रीमती लाजवंती भीमवाल जी के घर तहसील चकवाल जिला जेहलम (पाक.) में हुआ। मेहता शिवकुमार के नाना जी स्व. श्री इशर दास जी एवं नानी जी स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी मेहता लव परिवार से थे जो कि रुपवाल तव चकवाल जिला जेहलम (पाक.) के निवासी थे।

मैहता शिवकुमार भीमवाल जी ने 1936 में मैट्रिक की परीक्षा पंजाब यूनिर्विसिटी लाहौर से बहुत ही अच्छे अंक होकर प्रथम श्रेणी में पास की तथा ये एम.बी. हाई स्कूल अबोहर, जिला फिरोजपुर (पंजाब) के विद्यार्थी थे। उन्होंने 1940 में डी.ए.वी कालेज लाहौर से विद्यावाचस्पति की परीक्षा बहुत ही अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण की। उन्होंने 1942 से 1947 तक मिलट्री में नौकरी की। तथा इन्होंने दूसरे विश्व युद्ध में भी भाग लिया।

इनकी शादी स्व. श्री संतराम दत्ता जी एवं स्व. श्रीमती सावित्री दत्ता जी की सुपुत्री कुमारी पुष्पा देवी दत्ता जी से 1947 हुई।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेहता शिवकुमार भीमवाल जी पिछले कई वर्षों से अपने गाँव सिरदारपुरा जीवन जिला श्रीगंगानगर (राज.) अपनी जमीन पर खेती बाड़ी करवाते हैं। वे आयुर्वेद की दवाईयों से मरीजों का इलाज करते हैं। ये पूरी तरह से स्वस्थ हैं वे मोहयाल सभा अबोहर के चीफ पैट्रन हैं। इनके जन्मदिन पर 25.01.2015 को इनके सुपौत्रों ने एक हजार रुपए हरा चारा गाँव की गऊशाला में भेंट किया। तथा जीएमएस को 500 रु. एजूकेशन फंड में भेंट किए।

–मैहता विश्वामित्र भीमवाल *(छोटा भाई), प्रधान मो.स. अबोहर*

सारा दत्ता (पीहू) का जन्मदिवस

सारा दत्ता (पीहू) पुत्री श्रीमती शिल्पी दत्ता व अमित दत्ता निवासी 2/11, सिड्डी गेट, ताजगंज, आगरा द्वारा अपना 9वाँ जन्मदिन ताज दरबार, फतेहाबाद रोड, आगरा में 10 जनवरी को पूरे परिवार, मित्रों व रिश्तेदारों सहित सुन्दर केक काटकर धूम–धाम एवं हर्षोल्लास आदि के साथ अपना जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर सारा दत्ता के दादा–दादी श्री एस. पी. दत्ता व श्रीमती सुमन दत्ता द्वारा मोहयाल सभा आगरा व जीमएस को एक सौ एक रुपए शिक्षा फण्ड में प्रदान किए तथा सारा दत्ता की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाऐं दीं।–***अमित दत्ता,*** *पुत्र श्री एस.पी दत्ता, आगरा*

भूली बिसरी यादें

अफवाहें सच्ची नहीं होती–

मैं बच्चों के साथ आंगन में सोई हुई थी। रात को चोर आ गए। हमने पड़ोसी की सहायता ली। शहर में अफवाह फैल गई, ''प्रोफैसर की पत्नी ने चोर पकड़ कर पुलिस के हवाले किया''।

पति देव डॉ. मैहता वशिष्ठ देव मोहन सित. 1946 ई. में गवर्न. कालेज लुधियाना में लेक्चरार लग गए थे। माताजी श्रीमती दुर्गावती 8 वर्षीय देवर कश्यप व मैं लुधियाना आ गए। वार्षिक परीक्षा देने के बाद मार्च 1947 में जगदीश भी हमारे पास आ गया। 16 मई को प्रतिष्ठा का जन्म हुआ। बछोमल्ली से पिता जी का पत्र आया, वे अस्वस्थ थे। 2 जून को माताजी बछोमल्ली चली गई। वह कह गई कि बेटी 40 दिन की हो जाएगी तो कुछ दिनों के लिए घर आ जाना। जुलाई का अंत आ गया। लाहौर में हिन्दुओं की हत्याएं होनी शुरू हो गई थी। मेहता जी ने अकेले ही जाने का निर्णय किया। लाहौर में भाई कपिल को कहना था कि वह अपना जीवन खतरे में न डाले। कुछ दिन छुट्टियाँ लेकर लुधियाना आ जाए। बछोमल्ली से उन्होंने माता–पिता को साथ लाना था।

हम लोग गवर्न. कॉलिज के सामने लाला सन्त दास के फार्म में बने मकान में किराए पर रहते थे। आंगन बहुत खुला था। फलदार पेड़ पौधे लगे थे। साथ वाले मकान में लाहौर से आए तीन परिवारों ने अपना सामान रखा था। पर सभी लोग कहीं रिश्तेदार के घर रह रहे थे। विश्वामित्र आर.एस.एस. का प्रचारक बन कर वह कुछ दिनों के लिए लुधियाना आ रहा है। अतः मेहता जी ने किसी को हमारे घर में सोने के लिए नहीं कहा। रात को चोर आ गए। (उन्होंने घर का सामान बिखेरा, विश्वामित्र के लिए बनाया खाना खाया। साबुन व तेल लेकर चले गए) प्रतिष्ठा के रोने से मेरी नींद खुली। दरवाजे खुले थे। मैंने जगदीश को उठाया, पांचों (कश्यप) को जगाने में दिक्कत हुई। हम सभी आंगन से बाहर खेतों में चले गए। कुछ दूरी पर एक एम.एल.ए रहते थे। जगदीश को उनके घर भेजा। वे वृद्ध नौकर को लेकर आए, उन दोनों ने घर, आंगन का कोना कोना छाना, टार्च की रोशनी में सब तरफ देखा, चोर नहीं मिले।

प्रातः होते ही कुछ और लोग हमें पूछने आ गए। एक प्रोफेसर सहगल थे, रिटा. होने वाले थे, वे अपनी बेटी को साथ लेकर आए। वे बड़े गुस्से में थे, कहने लगे, ''ऐसा पढ़ा लिखा बेवकूफ इंसान मैंने नहीं देखा। परिवार को उजाड़ में छोड़कर चला गया है।'' मैंने कहा, पिताजी मेरे देवर ने आना था, परन्तु उन्होंने मुझे झिड़का, चुप करो, सफाई देने की जरूरत नहीं। जब तक मेहता नहीं आता, तुम बच्चों को लेकर हमारे घर आ जाओ। मेहता जी 3–4 दिन लाहौर रहने के बाद बछोमल्ली पहुँचे। उन्होंने माता–पिता को तैयार होने को कहा। पिताजी ने उन्हें कहा, हिंदू यहां से भाग रहे हैं। यह ठीक नहीं। हमें कुर्बानियां देनी होंगी, कहीं पर तो। मेहता जी का वहां कुछ दिन रहने का प्रोग्राम था। माता जी अपने सारे आभूषण, जिनमें मेरे भी थे, शहर में एक परिचित के घर रख दिए। मेहता जी शहर जा रहे थे। रास्ते में डाकखाना था। वे डाक देखने लगे, मेरा पोस्ट कार्ड मिल गया। उन्हें वहीं से लौटना पड़ा, पत्र देखकर माता–पिता को भी चिंता हुई। उन्होंने कहा, तुम जल्दी वापिस जाओ। हम कुछ दिनों में ही पहुँच जाएंगें।

प्रातः 4 बजे गेट खुलने की आवाज आई। मैं चीख उठी, जगदीश उठो, चोर आ गए चोर। मैंने सोए हुए जगदीश को बाजू से पकड़ कर उठाया। मेहता जी आंगन में आ पहुँचे, उन्होंने मुझे कंधे पकड़ कर आश्वस्त किया, लज्जा मैं हूँ। किसी को कष्ट में देखकर सहानुभूति दिखानी मानवता कहलाती है, परन्तु सीमा तक उल्लंघन करने से रिश्तों में खटास आ जाती है। प्रो. सहगल ने मुझे बेटी समझ कर हमदर्दी की थी, मैं नहीं जानती कि स्टा् के सामने उन्होंने मेहता जी को क्या कह दिया कि मेहता जी की उनके साथ बोल–चाल बंद हो गई। मेरा पत्र मेहता जी को न मिलता तो उन्होंने कुछ दिन बछोमल्ली रहना था। वे कई बार कहते, हम तीनों आते, या कोई भी न आता।

लाला संतदास के इस मकान में जो भी किराए दार आता, उसके वहां चोर जरूर आते। वे चोर बाहर से नहीं आते थे। खेतों में काम करने वाले मुस्लिम माली थे।

मेहता जी आने के बाद सियालकोट लाहौर रेलवे लाईन बंद हो गई। बछोमल्ली को बलोच सैनिकों ने घेर कर आग लगा दी। परिवार के परिवार खत्म कर दिए गए जो बचे, उन्हें मस्ज़िद में इकट्ठा करके मुस्लमान बना दिया। हमारे सास–ससुर वहां से निकल कर अपने मज़ारें के पास चले गए। मज़ारे मल्लाह थे, वे चाहते तो उन दोनों को रावी नदी पार करा कर भारत में पहुँचा सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और बलोच सैनिकों के हवाले कर दिया। उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहा, उनके इन्कार करने पर उन्हें गोलियों से भून दिया।

–लज्जा देवी मोहन, *मो. 09671432717*

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल सभाओं की गतिविधियाँ

आगरा

मोहयाल सभा आगरा की वार्षि नवगठित कमेटी हेतु बैठक श्री कामरान दत्ता जी के निवास 208, डिफेंस कॉलोनी, आगरा पर कर्नल श्री वी.के बाली सेवानिवृत्त जी की देखरेख में 01.02.2015 को कमेटी का गठन किया गया। सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा सहर्ष स्वीकार किया तथा श्री एस.पी. बक्शी व श्रीमती सावित्री दत्ता, पूज्यनीय माताजी श्री कामरान दत्ता जी द्वारा विशेष रूप से आशीर्वादों सहित गठित हुई।

संयोजकः श्री कामरान दत्ता, 208, डिफेंस कॉलोनी, आगरा
मो. 09897931916

अध्यक्षः कर्नल (से.नि.) वी.ए. मोहन, 68, मान बिहार, शमशाबाद रोड, आगरा, मो. 09897951872

सचिवः एस.पी. दत्ता, 2/11, सिड्डी गेट, ताजगंज, आगरा।
मो. 09897455755

कोषाध्यक्षः श्री प्रवीण दत्ता, 97 एम.एम.आई.जी ताजनगरी फेस–1, आगरा, मो. 08006683843

उप-सचिव (प्रतिनिधि मोहयाल सभा, आगरा): राजेश दत्ता, 20, निखिल गार्डन, फेस–1, नेहरू एन्क्लेव के पास, शमशाबाद रोड, आगरा, मो. 09897205558

कार्यवाहक अध्यक्ष (अंकेक्षक): श्री अनिल मेहता, 7,8/82, बल्केश्वर कॉलोनी, आगरा, मो. 09410812142

उपाध्यक्षः श्री बी.के. मोहन, जी 16, मुस्तफा क्वाटर, आगरा कैंट
मो. 07500895254

सदस्य (कार्यकारिणी): सर्वश्री गुलशन छिब्बर, अमित बक्शी, अनजान दत्ता, राजन दत्ता, विशाल छिब्बर, धीरज दत्ता, अमित दत्ता, रमेश वैद, सत्यप्रकाश दत्ता, प्रतीक मेहता, सुनील दत्ता, निरवान दत्ता और लिवान दत्ता आदि।

महिला कमेटीः सर्वश्रीमती मधु दत्ता, सुमन दत्ता, अम्बा दत्ता, पूनम मोहन, स्वाती मेहता, किरण मोहन, योगिता दत्ता, सुगंधा दत्ता, शिल्पी दत्ता, पूजा दत्ता, गीता मेहता और ममता दत्ता आदि।

मीटिंग का समापन नवगठित कमेटी के सदस्यों द्वारा श्रीमती व श्री कामरान दत्ता जी व उनके परिवार वालों को विशेष रूप से जलपान व आवभगत हेतु बहुत–बहुत धन्यवाद दिया और शांतिपाठ व जय मोहयाल, जय मोहयाल के उद्घोषण सहित समापन हुआ।

-एस.पी. दत्ता, *सचिव (मो.) 09897455755*

फरीदाबाद

फरीदाबाद मोहयाल सभा की मासिक बैठक 01 मार्च 2015 को मोहयाल भवन में श्री रमेश दत्ता जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। मोहयाल प्रार्थना के उपरान्त रायज़ादा के.एस. बाली जी ने पिछले माह की रिपोर्ट पढ़ी।

शोकः जीएमएस के सीनियर वाईस प्रेसीडेंट श्री जी.एल. दत्ता 'जोश' व श्रीमती सुभाष दत्ता (पत्नी श्री सुरेन्द्र दत्ता) के निधन पर उपस्थित भाई–बहनों ने दो मिनट का मौन रखा तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

श्री विनय बक्शी जी ने अपने में कहा कि रात अचानक मौसम बिगड़ने व वर्षा के कारण आज बैठक में भाई–बहनों की संख्या काफी कम है। उन्होंने सभी को श्री सनातन धर्म सभा, बांके बिहारी मंदिर नं.5, फरीदाबाद द्वारा आयोजित 'होली मिलन महोत्सव' का निमंत्रण दिया, जो 01.03.2015 को दोपहर 2 बजे से 6 बजे तक मनाया जाएगा। श्री मिथलेश दत्ता व श्री बलराम दत्ता जी (प्रचार मंत्री) ने सभी को होली महोत्सव में शामिल होने का आग्रह किया।

श्री ओ.पी. दत्ता जी ने अपनी शादी की सालगिरह जो 27 फरवरी को थी, व अपने जन्मदिन जो 18 मार्च को है, के उपलक्ष्य में स्वादिष्ट भोजन का प्रबन्ध किया था। सभी ने उन्हें शुभकामनाएँ दीं व भोजन का आनन्द लिया। श्री रमेश दत्ता जी ने भी श्री ओ.पी. दत्ता जी को बधाई दी व इतनी बारिश में मीटिंग में भाग लेने के लिए सभी का धन्यवाद किया।

अगले मास की मीटिंग मोहयाल भवन में 5 अप्रैल को होगी।

रमेश दत्ता, *प्रधान* — *मो.: 9212557096*

रायज़ादा के.एस. बाली, *महासचिव* — *मो. 9899068573*

पानीपत

सभा की मासिक बैठक 15 मार्च 2015 को श्री विजय मेहता जी के हुडा स्थित निवास स्थान पर प्रधान श्री कैलाश वैद जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। मोहयाल प्रार्थना व गायत्री वंदना के पश्चात निम्न लिखित सदस्यों के निधन पर दो मिनट का मौन रखा गया।

1. श्री जी.एल. दत्ता 'जोश' जी का 11 फरवरी 2015 को नई दिल्ली में निधन हो गया था। उनका निधन मोहयाल बिरादरी के लिए एक अपूर्णीय क्षति है। मोहयाल इतिहास के बारे में उनको जबरदस्त जानकारी थी।

2. मोहयाल सभा यमुनानगर के सचिव श्री विनोद मेहता जी के बड़े भाई श्री आनंद मेहता जी का निधन हो गया था।

3. श्री विकास छिब्बर जी (यमुनानगर) के माताजी श्रीमती सरोज छिब्बर व पिताजी श्री रमेश छिब्बर जी का निधन हो गया था।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4. श्री ब्रिज मोहन छिब्बर जी की सास जी का गत दिवस निधन हो गया था।

5. श्री विश्वामित्र भीमवाल जी के जीजाजी का नई दिल्ली में निधन हो गया था।

स्वास्थ्य कामना श्री ब्रिज मोहन छिब्बर जी की धर्मपत्नी श्रीमती वीणा छिब्बर पिछले कई दिनों से बीमार चल रही है उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की गई। श्री भूपिंदर कुमार दत्ता जी के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की गई, श्री सुरिंदर दत्ता जी के स्वास्थ्य लाभ की कामना की गई, श्री प्रह्लाद बाली पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे हैं उनके स्वस्थ होने की कामना की गई। जन. के. के. बक्शी के भी जल्दी ठीक होने की कामना की गई।

श्री प्रवीण वैद जी जिनको पथरी के ऑपरेशन हुए थे आज सपरिवार उपस्थित होने पर सभी सदस्यों ने उनका स्वागत किया। श्री विजय मेहता जी ने अपनी पोती दिव्या दत्ता के जन्म पर 200 रुपए पानीपत सभा को दिए।

श्री ऋत मोहन जी ने सदस्यों को सूचित किया की कि जो अपने बच्चों को आर्मी में भेजना चाहते हैं वो कर्नल वैद जी से संपर्क कर सकते हैं।

अंत में शांति पाठ के साथ मीटिंग संपन्न हुई। मीटिंग आयोजन तथा जलपान की सुन्दर व्यवस्था के लिए श्रीमती नीलम दत्ता, श्रीमती कृष्णावंती दत्ता, श्रीमती मानसी दत्ता, श्रीमती सुनैना व श्री विजय मेहता जी का धन्यवाद किया गया।

नरिंदर छिब्बर *(मो.) 8222023131, 9416412184*

उत्तमनगर-नई दिल्ली

श्रीमती तमन्ना दत्ता के निवास स्थान पर एक मार्च, 2015 को गायत्री मंत्रों एवं मोहयाल प्रार्थना के साथ सभा का आरम्भ किया गया, जिसमें 12 मोहयालों ने हिस्सा लिया। श्री एस.पी. वैद जी की अध्यक्षता में हुई, इस मीटिंग में विनीत छिब्बर ने बताया कि अपने क्षेत्र के 11 विधवा पेंशन में से कुछ फार्म जीएमएस में भेज दिए गए है और बचे हुए फार्म को जल्दी ही जमा करा दिया जाएगा।

अंत में सभा के अध्यक्ष द्वारा तमन्ना जी को हल्के जलपान के लिए शुक्रिया किया और साथ ही सबने दिल्ली में चल रहे 10वीं और 12वीं की परीक्षा के लिए छात्र–छात्राओं को शुभ कामनाएँ दी गईं।

-विनीत बक्शी, छिब्बर, *महासचिव*
मो. 8802624221

प्रेमनगर-देहरादून

सभा की मासिक बैठक दिनांक 22.02.2015 को श्री जी.पी. शर्मा (लौ) एवं श्रीमती नूतन शर्मा के आवास पर हुई। बैठक की अध्यक्षता माननीय प्रधान महोदय श्री डी.एन. दत्ता ने की। मोहयाल प्रार्थना के पश्चात बैठक की कार्यवाही आरम्भ की गई। गत माह की कार्यवाही सचिव श्री राजेश बाली ने पढ़कर सुनाई एवं आय–व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया, सभी ने इसका अनुमोदन किया।

शोकः स्व. श्री जी.एल. दत्ता 'जोश' वरिष्ठ उपाध्यक्ष जीएमएस तथा स्व. श्री सतीश बख्शी बड़ोदरा (श्री डी.एन. दत्ता, प्रधान एमएस प्रेमनगर के भांजे) के निधन पर उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

श्री रमेश दत्ता ने 13–14 अप्रैल 2015, बैशाखी के शुभअवसर पर वृंदावन जाने का प्रस्ताव रखा तथा सभी ने सहर्ष अपनी सहमति जताई। इस मीटिंग में सदस्यों की उपस्थिति कम होने पर प्रधान जी ने चिंता व्यक्त की तथा अनुरोध किया कि अगली मीटिंग में सदस्यगण अधिक से अधिक संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश करें।

अंत में सभी उपस्थित सदस्यों ने श्रीमती नूतन शर्मा 'लौ' एवं श्री जी. पी. शर्मा 'लौ' का स्वादिष्ट भोजन से तृप्ति पर हार्दिक धन्यवाद किया।

-राजेश बाली, *सचिव (मो.) 9758135583*

बराड़ा

सभा की मासिक बैठक दिनांक 01.03.2015 को सभा के प्रधान श्री हरदीप सिंह वैद जी की अध्यक्षता में श्री राजीव दत्ता पुत्र श्री करतारचंद दत्ता जी के निवास स्थान दो सड़का में मोहयाली प्रार्थना व गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ आरम्भ हुई। सभी सदस्यों ने एक–दूसरे को होली की मुबारक दी। सभा ने सह–सचिव श्री बलदेव सिंह दत्ता जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिसे सभी ने अपनी सहमति प्रकट की।

अन्त में सभी ने जलपान के लिए श्री राजीवन दत्त व परिवार का धन्यवाद किया।

-रविन्द्र कुमार छिब्बर, *सचिव*
(मो.) 09466213488

अबोहर-पंजाब

दिनांक 16.02.2015 सभा की मासिक बैठक श्री मैहता देवेन्दर कुमार भीमवाल जी के घर गाँव भंगर खेड़ा में चीफ पैट्रन मैहता कृष्ण कुमार भीमवाल जी की अध्यक्षता में हुई। मोहयाल प्रार्थना व गायत्री वंदना के पश्चात निम्नलिखित सदस्यों के निधन पर दो मिनट का मौन रख श्रद्धांजलि दी गई।

1. जीएमएस के वरिष्ठ उपप्रधान स्व. चौधरी जीएल दत्ता 'जोश' जी का स्वर्गवास दिल्ली में हुआ।

2. स्वर्गीय बक्शी रमेशचन्द्र वैद जी सुपुत्र श्रीमती एवं श्र बक्शी खूब चंद जी वैद का निधन 30.01.2015 को महरौली नई दिल्ली के निवासी थे तथा मेहता विश्वामित्र भीमवाल प्रधान मो.स. अबोहर एवम् मेहता श्री कृष्ण कुमार जी भीमवाल चीफ पैट्रन मो.स. अबोहर के जीजा जी थे।

मैहता देवेन्द्र कुमार भीमवाल जी ने सुझाव दिया कि जीएमएस द्वारा मोहयाली की सातों जातियों के कुल देवता, कुल देवी, जेठेरे गुरू कौन–कौन हैं। जैसा कि सातों जातियों के ऋषियों के बारे में मोहयाल मित्र में कई बार बताया गया है।

मैहता ललित कुमार भीमवाल जी ने बताया कि जबसे वे आजीवन सदस्य बने हैं सिर्फ एक ही 'मोहयाल मित्र' प्राप्त हुआ है, जबकि पहले आदरणीय दादाजी के नाम से हर माह मो.मित्र प्राप्त होता था। रायज़ादा बलदेव राज बाली जी ने बताया कि उनके यहाँ मो.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मित्र रायज़ादा संजीव कुमार बाली एवं रायज़ादा लवकेश बाली आजीवन सदस्य ने मोहयाल मित्र न मिलने के बारे में बताया।

शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई। जलपान की व्यवस्था के लिए भीमवाल परिवार की बहुओं व पौत्रियों का धन्यवाद किया।

■ सभा की मासिक बैठक मेहता अमरदीप भीमवाल जी के निवास स्थान गाँव भंगर खेड़ा में चीफ पैट्रन मेहता कृष्ण कुमार भीमवाल जी की अध्यक्षता में 01.03.2015 को हुई। गायत्री वंदना व मोहयाल प्रार्थना के बाद सभा की कार्यवाही शुरू हुई। सरपंच गांव भंगर खेड़ा से पंचायत चुनाव में सरपंच चुने जाने पर मोहयाल सभा के सदस्यों ने दोबारा सरपंची जीतने की बहुत बधाईयाँ दीं, भीमवाल परिवार को एवम् मेहता जीतेन्द्र कुमार भीमवाल जी को।

मैहता मधुर कुमार भीमवाल जी ने सुझाव दिया कि जो सदस्य जीएमएस के आजीवन सदस्य नहीं बने वो भविष्य में जीएमएस के आजीवन सदस्य बने।

अन्त में शांति पाठ के बाद सभा संपन्न हुई, जलपान की व्यवस्था के लिए सभी सदस्यों ने धन्यवाद दिया।

मैहता विश्वामित्र भीमवाल, *प्रधान*
(मो.) 9780160085

होशियारपुर

मोहयाल सभा होशियारपुर की मासिक बैठक प्रधान श्यामसुन्दर दत्ता जी की अध्यक्षता में मोहयाल भवन ऊना रोड, न्यू बैंक कॉलोनी में हुई। गायत्री मंत्र का पाठ किया गया।

इस अवसर पर राजीव बाली व शशपिन्द्र बाली जी ने प्रधान जी को बताया कि 19 मार्च को बाली पाराशर गौत्र के जठेरों का मेला नंगल खुर्द नजदीक माहिलपुर, तहसील गढ़शंकर होशियारपुर होने जा रहा है। जीएमएस के प्रधान रायजादा बी.डी. बाली जी को आमंत्रित करने के बारे में विचार रखा। प्रधान जी ने बताया कि मोहयाल आश्रम की देखभाल करने वाले राकेश कुमार ने अपना मकान बना लिया है। अब उसके स्थान पर जतिन्द्र कुमार को सभा में रखा जाएगा। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ।

बैठक में विजयंत बाली, मनोज दत्ता, पवन मेहता, इन्द्रमोहन बाली, राजीव बाली, शशपिन्द्र बाली, प्रधान श्याम सुन्दर दत्ता उपस्थित थे।

-राजी कुमार, मनोज दत्ता *(मो. 9463766261)*

शुभकामनाएँ

बैशाखी दे खुशिआं भरे मौके ते सब नूँ बौ-बौत बधाइयाँ। सब दे घर-बार, व्यापारां विच खुशियाँ छाईयाँ रहण, खूब बरकत होवे।

बैशाखी के पर्व पर सबको हार्दिक शुभकामनाएँ! खुशियों और उमंगों भरा पर्व सबके जीवन को सुख और आनंद से भर दे। ***-जनरल मोहयाल सभा***

हमारे प्यारे पूज्य भापा जी श्री दिवान चन्द बाली

श्री दिवान चन्द बाली, सुपुत्र श्री हरिदत्त बाली, अपने जीवन की लंबी यात्रा पूरी करके 24 फरवरी 2015 मंगलवार शाम को, स्वर्ग सिधार गए। हमारे इस दुःख में सभी सगे सम्बन्धी, बहिन–भाई उनके सभी परिवार बाली साहिब और हमारी पूज्य स्वर्गीय माताजी के सभी बहिन–भाई इनके परिवार और करनाल के सब वासी जो भापा जी को पिछले 60–65 सालों से जानते थे, हमारे दुःख में शामिल होने करनाल में एकत्रित हुए।

श्री दिवान चंद बाली जी (हमारे पूज्य पिता) एक बड़े ज़मीदार के बेटे थे। उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए उन्होंने पढ़ाई की और एल.एल.बी की। 1947 की भारत–पाकिस्तान की विभाजन के उन्हें अपना सब कुछ छोड़कर तीन कपड़ों में लाहौर से लखनऊ, लुधियाना, बटाला और फिर करनाल आना पड़ा। लाहौर में वह मार्केटिंग आफिसर थे और बटाला में Town Rationing Officer थे। करनाल में, उन्होंने वकालत की प्रैक्टिस शुरू की। एक तिनके से ऊपर आते–आते उन्होंने अपनी बुद्धि, सदाचार और मेहनत से 94 साल की आयु तक वकालत करते रहे। हमारी माँ के साथ मिलकर हम सभी भाई–बहिनों को और न जाने कितने लोगों को अच्छा इंसान बनाया और न जाने कितने लोगों को सुख व खुशी दी।

हम सभी बहुत खुश किस्मत हैं कि हम इस परिवार में पैदा हुए। प्यारी मम्मी जी, भापा जी के घर पैदा हुए, हमें यही शिक्षा दी गई कि हम एक Useful, Sensible और Helpful नागरिक बनें हमारी माँ ने स्वंय की उदाहरण देकर मेहनत कर शिक्षा दी। दुनियादारी में सबके साथ कैसे व्यवहार करना है, प्यारे भापा जी ने हमेशा थोड़े शब्दों में हमें सिखाया कि कैसे हम Strong Character के बन सकते हैं।

हम सभी की यही प्रार्थना है कि हमारे पूज्य पिता, प्यारे भापा जी की आत्मा को शांति मिले। ***-बाली परिवार***

अप्रैल के त्योहार और महत्वपूर्ण दिन

- **दो अप्रैल-महावीर जयंती, तीन अप्रैल पूर्णिमा व्रत, गुड फ्राइडे।**
- **तेरह अप्रैल-वैशाखी, चौदह अप्रैल अंबेडकर जयंती, पंद्रह अप्रैल एकादशी व्रत, सोलह अप्रैल प्रदोष व्रत, अठारह अप्रैल अमावस्या, इक्कीस अप्रैल अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती।**
- **तेइस अप्रैल-शंकराचार्य जयंती, सूरदास जयंती, चौबीस अप्रैल श्री रामानुजा चार्य जयंती, छब्बीस अप्रैल दुर्गाष्टमी, सत्ताइस अप्रैल जानकी जयंती, उनतीस अप्रैल मोहिनी एकादशी।**

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्रद्धांजलि एक पुत्री की अपने पिता को

अपने बड़ों व माता–पिता से सुना था समय बहुत बलवान होता है। आज मैं उसे महसूस कर पाई हूँ। माता–पिता के न होने पर ऐसा लग रहा है कि जैसे पीछे मुड़कर देखने वाला कोई न रहा। इतने बड़े होने पर भी आज अनाथ होने का आभास हो रहा है। परन्तु साथ ही उस भगवान की आवाज आ रही है कि उनकी परछाईं व पद चिन्ह हमेशा साथ हैं सिर्फ महसूस करना है।

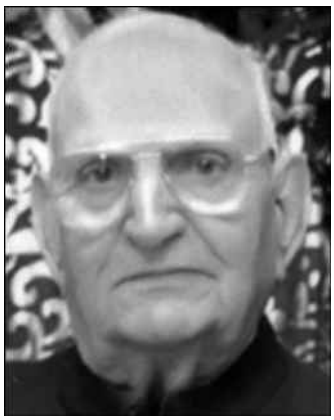

मैं, प्रभा मेहता बहुत गर्व से कहती हूँ कि में चौ. गुरचरनलाल दत्ता और श्रीमती शीला दत्ता की सुपुत्री हूँ। माता–पिता ने हमारा पालन–पोषण इस सुंदर ढंग से किया है जो शब्दों में लिखना संभव न होगा। आज मेरे पापाजी चौ. गुरचरनलाल दत्ता की प्रार्थना सभा है। परन्तु में तो आज जीवन के पिछले उन सालों में पहुँ गई, जब मेरे पापा जी विभाजन के बाद आकर यहाँ किस तरह से रहे। मैं उस परिवार की बात करना चाहूँगी कि हमारे पूर्वज पुलिस, सेना व अन्य उच्च पदों पर रहकर हमेशा देश की सेवा के लिए तत्पर रहे। आज उन सबको नमन करती हूँ।

मेरे पापा जी की श्रद्धांजलि पढ़ते हुए मन व आँखें नम हो रही हैं पर सिर गर्व से ऊपर है। पापा जी के बारे में बोलूं तो सबसे पहले कहूँगी कि शिक्षित, उच्च चरित्र, अनुशासित, मेहनती, सभ्य, वफादार, प्रेम से परिपूर्ण काम के प्रति लग्न, परिवार के प्रति सेवा व प्रेम और इसके बाद और भी जो अलंकार उनके लिए लिखूँ तो कम है। परिवार के साथ जो सेवा व उद्धार समाज का किया वो तो आज आए इस शोक सभा में सब मित्रगण कर रहे हैं।

अपनी थोड़ी सी आय में हम सब भाई, बहिन को उच्च शिक्षा व शुद्ध संस्कार दिए। शिक्षा के लिए उनके विचार से कि एक शिक्षित व्यक्ति ही शिक्षित परिवार व समाज को निर्मित कर सकता है। कभी भी लड़के व लड़कियों में भेदभाव नहीं किया। सबको उच्च शिक्षा देने के बाद कहते थे मेरे पास सात डिग्री हैं यानि हम सबकी डिग्री वो अपनी मानते थे। सब बहन भाइयों की शादी समाज के शिक्षित व उच्च परिवारों में की। हमेशा सादा जीवन उच्च विचार की शिक्षा देने वाले मेरे माता–पिता यह मानते थे कि उच्च विचार कपड़ों और आभूषणों से नहीं हमारे व्यक्तित्व व व्यवहार में नजर आते हैं। सब्र शांति का अनाज खिलाकर उन्होंने हमें हर हाल में जीने का तरीका सिखाया। दिल्ली यूनिवर्सिटी के उच्च कॉलेज में शिक्षा दिलाकर उन्हें जो गर्व का आभास होता था, उस में शब्दों में न लिख पाऊँगी। चाहे वो कमला नेहरू कॉलेज हो या Jesus & Marry College, श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स हो या Delhi School of Economics हमेशा यह ही सिखाया कि जिस इमारत की बुनियाद मजबूत हो उसे गिराना तो असंभव है, उसे छेड़ना भी नामुमकिन है। मेरी बड़ी बहन मधु उप्पल को उन्होंने पढ़ाने के साथ नेशनल लेवल तक हाकी खुद सिखाई व खेलने के लिए भेजा। ऊमा मेरी छोटी बहन को दिल्ली स्टेट की पहली लड़की को Para Troupping का कलर दिलाने में उनकी ही शिक्षा है। जब समाज में लड़कियों को बाहर जाने से मना किया जाता था, परन्तु जॉब करने के लिए मुझे तत्पर उन्होंने ही किया। मैंने उन्हीं से यह सब सिखा है।

अपनी नौकरी को जिस मेहनत व अनुशासन से उन्होंने पूरा किया वो शिक्षा भी मुझे उन्हीं से मिली। उनकी शिक्षा हमारी दौलत है। हमारे परिवार के बच्चे उच्च शिक्षा पाकर डाक्टर, इंजिनीयर, व वकील सब उच्च पदों है। आज सब उनके पद चिन्हों पर चलकर उनका गौरव बढ़ा रहे हैं। माँ की जगह तो उनकी Dictionary में सबसे ऊँची थी।

मेरी श्रद्धांजलि उनके प्रति यह है कि रेत के ऊपर उनके वो पद चिन्ह् कभी किसी हवा व धूल से न मिटें। मैं आज उन्हें सैल्यूट करती हूँ।

-प्रभा मेहता, *पत्नी सुरेश मेहता, आजीवन सदस्य जीएमएस, गुड़गांव, (मो.) 9810797567*

श्री सतीश बख्शी का निधन

श्री सतीश बख्शी पुत्र श्री जगमोहन बख्शी, निवासी बड़ोदरा जो कि श्री डी.एन. दत्ता जी के भांजे थे, अपनी जीवन यात्रा कम उम्र मात्र 54 वर्ष में ही पूरी करके दिनांक 30.01.2015 को पंचतत्व में विलीन हो गए। वे अपने पीछे पत्नी, एक पुत्री व एक पुत्र छोड़ गए हैं। उनका असामयिक देहावसान परिजनों के लिए अत्यंत दुःखदायी है, ईश्वर की ऐसी ही इच्छा रही होगी। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

*–**राजेश बाली,** सचिव एमएस प्रेमनगर देहरादून (मो.) 9758135583*

पहली बरसी

एक बरस बीता, मानो एक युग की तरह,
चले गए हम सबको छोड़कर आप जाने कहाँ।

स्व.डॉ.सतपाल मेहता (मोहन) जी की पहली बरसी (वरहीणा) 7 मार्च 2015 को उनके निवास ई–39, वैस्ट पटेल नगर, दिल्ली में मनाई गई। उनकी धर्मपत्नी ने हवन का आयोजन करवाया, तत्पश्चात ब्राह्मणों को भोजन करवाया गया। सभी परिजनों और रिश्तेदारों ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

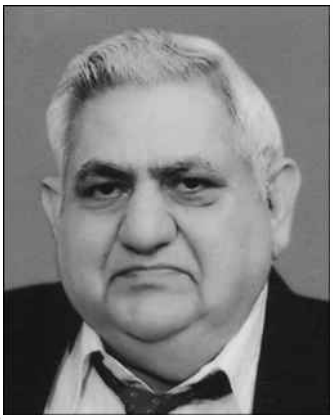

स्व. डॉ. साहिब कुलश्रेष्ठ पुत्र, अच्छे पति, बहनों का ध्यान रखने वाले भाई, मित्रों जैसे पिता, नाती, पोतों के प्रिय नाना एवम् दादाजी। उन्होंने अपने जीवन काल में हर रूप एवं रिश्तों को बखूबी निभाया। इस

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

महान आत्मा के व्यक्तित्व को हम एक पल के लिए भी भूला नहीं पाए हैं। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी डॉ. श्रीमती सुदर्शन मेहता (मोहन) ने जीएमएस एवं वेस्ट जोन मोहयाल सभा को क्रमशः ग्यारह सौ रुपए अर्पित किए।–***डॉ. श्रीमती सुदर्शन मेहता (मोहन),*** *मो. 8800296352*

स्वर्गीय कमलेश मेहता को श्रद्धांजलि

स्व. श्री कमलेश मेहता (पूर्व सचिव) मोहयाल सभा आगरा की बरसी 06.01.2015 को आगरा में मनाई गई। स्व. श्री कमलेश मेहता (खेराती) पुत्र स्व. श्री चुन्नीलाल मेहता निवासी–खेरियां (पाकिस्तान) अब नि. 26/1, बल्केश्वर कॉलोनी, आगरा का निधन 15.02.214 को हुआ था। उनकी बरसी उनके परिवारजनों सहित 06.01.2015 को निवास स्थान पर पूर्ण श्रद्धा व पूजा पाठ सहित मनाई, जिसमें उनके परिवार से पुत्रों की गौरव छिब्बर, विभव छिब्बर, बहुओं व बच्चों सहित श्रीमती रीमा छिब्बर पत्नी गौरव छिब्बर व कीर्ती छिब्बर पत्नी श्री विभव छिब्बर एवम् स्व. श्री कमलेश मेहता की पुत्री व दामाद रितु दत्ता (बिनटी) पत्नी श्री अजय दत्ता तथा स्व. श्री कमलेश मेहता जी की बहन श्रीमती कृष्णा मेहता एवं अन्य रिश्तेदारों, भाईयों, भतीजों, भांजों, निकटतम मित्रों, स्थानीय मोहयाल सभा आगरा के पदाधिकारी पूर्व अध्यक्ष श्री कामरान दत्ता व सचिव एस. पी. दत्ता आदि समस्त लोगों द्वारा मनाई गई। श्री मेहता जी की कार्यों की भूरी–भूरी सराहना की गई।

इस उपलक्ष्य में उनकी पत्नी श्रीमती आशा मेहता द्वारा 500–500 रुपए मोहयाल सभा आगरा एवं जीएमएस के शिक्षा फंड (विधवा फंड) में प्रदान किए।–***श्रीमती आशा मेहता***

प्रथम पुण्य-तिथि

स्वर्गीय भाई अमरनाथ छिब्बर जी की प्रथम पुण्यतिथि 05.03.2015 को हमारे पूज्यनीय पिताजी को स्वर्गवास हुए एक वर्ष हो गया। हमारे पिता जी अक्सर कहा करते थे कि अगर जीवन में संघर्ष नहीं

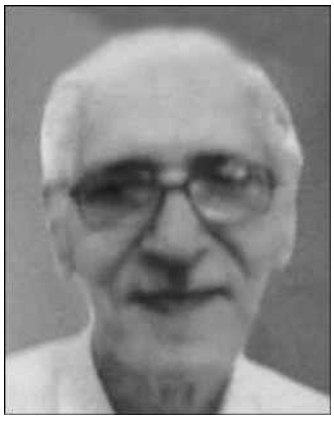

है तो जीवन में जीने का आनंद नहीं आता। हमेशा सादा जीवन एवं उच्च विचार की विचाराधारा के प्रेरक हमारे पिता जी थे। वे शिक्षा एवं जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए सदैव अग्रसर रहते थे। हमने जीवन में तमाम, खशियाँ व उपलब्धियाँ जो प्राप्त की है, वे सब उनको ही समर्पित हैं। इस मृत्यु लोक में, मनुष्य जन्म लेता है फिर कर्म करते हुए मृत्यु को प्राप्त होता है। यह प्रकृति का शाश्वत नियम है। व्यक्ति की बातें तो भूल जाती हैं, लेकिन उसकी यादें हमेशा याद आती हैं।

सदैव आपकी स्मृति में–***श्रीमती निर्मला छिब्बर*** *(पत्नी), भाई विद्या सागर छिब्बर एवं भ्रातागण, लखीमपुर, खीरी (उ.प्र) 9451809356*

पाँचवी पुण्य-तिथि

स्वर्गीय मेहता कुलभूषण भीमवाल सुपुत्र मेहता शिवकुमार भीमवाल व श्रीमती पुष्पा देवी भीमवाल, पौत्र स्व. मेहता नरनारायण भीमवाल

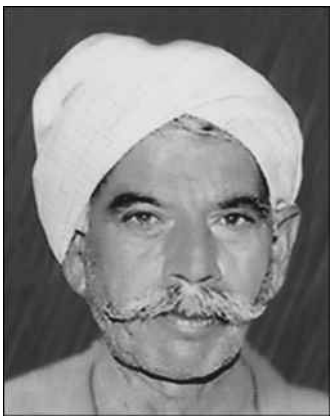

व श्रीमती लाजवन्ती भीमवाल करियाला (प. पाक) जिला जेहलम, स्व. नानी श्रीमती सावित्री दत्ता जी व नाना जी स्व. श्री संतराम जी दत्ता मुण्ड दत्ता जिला जेहलम तहसील चकवाल (पाक) के नाती थे। स्व मेहता कुलभूषण भीमवाल का स्वर्गवास 01.01.2010 को श्रीगंगानगर (राजस्थान) में हुआ। उनकी पाँचवी पुण्य–तिथि 01.01.2015 को उनके निवास स्थान गांव व डाकखाना सिरदारपुरा जीवन तहसील सादूल शहिर जिला श्रीगंगानगर में हवन करवा कर मनाई गई। इस अवसर पर समस्त भीमवाल परिवार, रिश्तेदार व मित्रगण उपस्थित थे।

अस अवसर स्व. कुलभूषण के पिता श्री शिवकुमार भीमवाल जी एवं माता जी श्रीमती पुष्पा देवी भीमवाल ने जीएमएस के एजूकेशन फंड में 500 रुपए भेंट किए।–***मेहता विश्वामित्र भीमवाल*** *(चाचाजी), प्रधान मो.स. अबोहर (मो.) 9780160085*

काम की बातें

1. जिन्दगी में कुछ दोस्त, काँच और परछाई जैसे रखो क्योंकि काँच कभी झूठ नहीं बोलता, और परछाई कभी भी साथ नहीं छोड़ती।
2. दूसरों के लिए जीने से, जीवन में खुशियाँ भर जाती हैं।
3. अगर आपने अपना कोई रहस्य किसी एक व्यक्ति को बताया है तो आप उसे अपने इस रहस्य को दूसरों को बताने से रोक नहीं सकते।
4. जो लोग बहुत बोलते हैं, उनसे चुप रहना सीखा, जिन लोगों में सब्र हैं, इनसे सब्र का सबक सीखा।
   लेकिन कभी भी इन शिक्षकों का शुक्रिया अदा नहीं किया।
5. अगर आप प्यार से नहीं और आधे अधूरे मन से किसी काम को कर रहे हैं तो बेहतर है कि आप उस काम को करना छोड़ ही दें।

–***संजीव दत्त शर्मा,*** *मो. 9812118104, 9728125204*

मोहयाल मित्र में रचनाएँ भेजने के पश्चात् प्रकाशन के लिए दो माह तक प्रतिक्षा करें। इसके पश्चात् ही कार्यालय से संपर्क करें। कृपया समस्त रचनाएँ-रिपोर्ट साफ-साफ लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। पोस्ट कार्ड या छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर रचनाएँ न भेजें। ई-मेल से भेजी रचनाएँ और रिपोर्ट साफ-साफ लिख कर भेजें। नहीं तो छप नहीं पाएगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अश्वनी दत्ता बने इनैलो राजनीतिक मामलों की कमेटी के सदस्य

यमुनानगर के वरिष्ठ पत्रकार अश्वनी दत्ता जो विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों से जुड़े रहे हैं को इंडियन नेशनल लोकदल की राजनीतिक मामलों की कमेटी का सदस्य नियुक्त किया गया है। पार्टी के वरिष्ठ नेता अभय सिंह चौटाला ने चंडीगढ़ में उक्त घोषणा

की। वरिष्ठ पत्रकार अश्वनी दत्ता जो मोहयाल सभा यमुनानगर के अद्यक्स रह चुके हैं। श्री दत्ता कई राष्ट्रीय हिंदी व अंग्रेजी समाचार पत्रों में कार्य कर चुके हैं। पत्रकारिता के साथ साथ वह लायंस क्लब के प्रधान भी रह चुके हैं। हरियाणा यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट के प्रदेशाध्यक्ष पद पर रहते हुए अश्वनी दत्ता ने प्रदेश के सभी जिलों का दौरा करके वहाँ यूनियन की इकाईयां बनाकर संगठन को मजबूत किया था। पिछले करीब तीस वर्षों से इनैलों सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला के साथ पारिवारिक संबंध रखने वाले अश्वनी दत्ता को अब पार्टी में जिम्मेवारी दी गई है। यमुनानगर इनैलों के वरिष्ठ नेताओं ने अश्वनी दत्ता को यह पद सौंपे जाने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि इससे इनैलों और मजबूत होगी।

इस मौके पर अमृतपाल त्यागी, नायब सिंह, मंगतराम कपूर, मधु सुदन, चौधरी जयचंद, ओमप्रकाश तलुजा, ओ.पी छिब्बर, गुरजीत सिंह, नरेंद्र, दीपक बक्शी एवं विक्की चोपड़ा उपस्थित थे।

पिछले दिनों जनरल मोहयाल सभा के अध्यक्ष रायज़ादा बी.डी बाली के यमुनानगर आगमन पर अश्वनी दत्ता ने विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की थी।

"गुरूर न कर"

बख्श देता है खुदा उनको, जिनकी 'किस्मत' खराब होती है,
वो हरगिज नहीं बख्शे जाते, जिनकी नीयत खराब होती है।
न मेरा 'एक' होगा, न तेरा 'लाख' होगा,
न तारीफ़ तेरी होगी, न मेरा मज़ाक होगा।
गुरूर न कर 'शाह–ए–शरीर' का,
मेरा भी 'खाक' होगा, तेरा भी 'खाक' होगा।
जिंदगी भी 'ब्रांडेड–ब्रांडेड करने वालो...
याद रखना 'कफ़न' का कोई ब्रांड नहीं होगा।

–प्रो. वी.के. दत्ता, *जालंधर शहर*

हिन्दोसतां हमारा (हमारा भारत)

यह नज़्म उर्दू के मशहूर शायर "इकबाल" की नज़्म "तराना–ए–हिन्दी" "सारे जहां से अच्छा हिन्दोसतां हमारा" के पेटरन में लिखी है, "इक़बाल" की नज़्म हिन्दोस्तान भारत की ऊपरी प्रशंसा में हैं, हिन्दोस्तान (भारत) पर मेरी यह नज़्म हिन्दोस्तान (भारत) के अंदर के ऐतिहासिक गुणों की प्रशंसा में है।

*–लेखक–**डॉ. कंवल कृष्ण बाली***

दुनिया में इक वतन है हिन्दोस्तां हमारा।
ये है मकां हमारा, ये है जहां हमारा।।

मौसम यहाँ पै आकर करते हैं रंगकारी।
सजता है जिसके रुख पर ये गुलिस्तां हमारा।।

तबदीलियों के रह रो, हम इरतिका के हमदम।
खिलता है रोज़ इसमें, जोक़–र 'वां हमारा।।

हैं नाम से तमद्दुन, पहचान से तर्ग़ुयुर।
सदियों का सिलसिला है, नाम–ओ–निशां हमारा।।

हालात की ख़बर पर देते है हम गवाही।
ठहरा नहीं कहीं पर कोई ज़मां हमारा।।

रस्ता है इम्तिहां का, राही हैं हम–वतन सब।
ता ज़िन्दगी चलेगा ये कार 'वां हमारा।।

तहलील–ए–ज़िदगी की है हमदमी मुयस्सर।
तनक़ीद का रवैया है पासबां हमारा।।

उल्फ़त की लहर बनकर चलता है हर बशर यां।
दर्या दिली का लहरा, है महरबां हमारा।।

दुनिया की अक़िबत है, आज़ाद फ़िक्र–ओ–फ़न में।
है रहनुमाए दोरां, हिन्दोस्तां हमारा।।

प्रस्तुति– ***अ.ना. दत्ता***

एक सवाल जिंदगी से

साकी है उम्र काटी तेरे गेसू सँवारने में,
फिर बता कि तेरी है जुल्फ में यह खम कैसा?

सदियाँ बिताई मैंने खुशियों के फूल चुनते,
फिर बता कि मेरी झोली में है यह ग़म कैसा?

लाखों वफाओं के बदले दी तूने बेवफाईयाँ,
कुछ तो बता साकी है तेरा यह करम कैसा?

किस बेरुखी का शिकवा, किस भूल की शिकायत,
तुझको है मुझसे साकी है तेरा यह भरम कैसा?

तेरी खुशी की खातिर हस्ती मिटा दी हमने,
बदले में तूने हमसे किया है यह चलन कैसा?

–निर्मला मोहन, *पालम विहार, गुड़गांव*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

एक शानदान मोहयाल पंडित सरदार बहादुर दिलदार सिंह दत्ता (आई.पी.एस. रिटा.)

''आज मैंने दुनियाँ का सबसे खूबसूरत इंसान देखा है''। यह शब्द थे स्व. खानबहादुर कुर्बान अली खान के दस वर्ष के पोते के जो उसने स्व. सरदार बहादुर दिलदार सिंह दत्ता को लाहौर में अपने दादा की कोठी पर मिलने पर कहे थे। 1947 में पाक भारत के विभाजन से पहले ब्रिटिश सरकार की मुख्य पुलिस शाखा एस.पी.ई (Special Police Establishment) की वे दो उच्चाधिकारी ही नहीं जिगरी दोस्त भी थे।

1947 में भारत विभाजन के बाद खान साहिब पाकिस्तान चले गए जहाँ उन्होंने पाकिस्तान की मुख्य पुलिस शाखा आई.एस.आई (Inter Service Intelligence) की स्थापना की। भारत के प्रथम गृह मंत्री सरदार पटेल ने स्वतंत्र भारत के मुख्य पुलिस विभाग की स्थापना एवं रूप रेखा बनाने के लिए सरदार बहादुर को अन्य उच्चाधिकारियों के साथ जिम्मेदारी दी। इस प्रकार स्वतंत्र भारत की प्रथम मुख्य पुलिस शाखा सी.बी.आई (Central Bureau of Investigation) अन्तोतगत्वा 6 अप्रैल 1963 को स्थापना की गई। अखंड भारत बँटवारे एवं दो राष्ट्रों के मुख्य पुलिस विभाग के उच्चाधिाकारी एवं अपने–अपने राष्ट्रों को समर्पित होने पर भी ये जिगरी दोस्त एक दूसरे को नहीं भूले थे।

एक सरकारी काम के कारण सरदार बहादुर सिंह को लाहौर (पाकिस्तान) जाना पड़ा। इसी दौरान एक शाम वह खान बहादुर के घर पर आमंत्रित थे। वे दोनों अपने पुराने दिनों की बातें कर रहे थे तभी सरदार बहादुर दिलदार सिंह दत्ता ने देखा कि कमरे के एक दरवाजे पर टंगा पर्दा हिलता है और एक आठ–दस साल का गोरा–चिट्टा बच्चा पर्दे के पीछे से झाँकता हैं, फिर उसका चेहरा पर्दे के पीछे गायब हो जाता हैं। सरदार बहादुर ने पूछा, भाई यह कौन है? खान बहादुर ने कहा की, ''यह उनका पोता है जो तुम से मिलना चाहता है पर डरता भी है, इसकी स्कूल की किताबों में लिखा है कि सिक्ख एक जालिम कौम हैं ये कभी भी कहीं भी किसी का कत्ल कर सकते हैं, यह लोग हमारे दुश्मन मुल्क हिन्दुस्तान में रहते हैं। फिर वह हँसते हुए कहने लगे कि यह पाकिस्तान सरकार की चाल हैं जिसके तहत व भारत के बहादुर सिक्खों के प्रति बचपन से ही नफरत की जड़े डालना चाहते हैं। थोड़ी देर बाद बच्चे ने महसूस किया कि उसके दादा और सिक्ख मेहमान खूब हँस–हँस कर बातें कर रहे हैं। फिर वह दोनों के पास आ खास कर सरदार बहादुर से खूब हिल–मिल कर बतियाने लगा, जैसे वह उन्हें मुद्दत से जानता हो। सरदार बहादुर जब अपने मित्र खान बहादुर एवं उनके परिवार से विदा ले रहे थे, तो उनका पोता जिसके दिल में सिक्खों के प्रति खौफ एवं नफरत थी, सरदार बहादुर की ओर ईशरा करके बोल उठा, आज मैंनें दुनिया का सबसे खूबसूरत इन्सान देखा हैं। सरदार बहादुर दिलदार सिंह दत्ता ने बच्चे को अपने सीने से लगा लिया। बच्चे के दिल में उनके प्रति नफ़रत की जगह प्यार और सम्मान ने ले ली थी।

ऐसे ही थे चेहरे और दिल से खूबसूरत दिलदार सिंह... मेरे मामा जी। वह पुलिसिया अधिकारी की जगह संत लगते थे, उनके चेहरे से नूर टपकता था जैसे कोई फरिश्ता हों। एक बार वह गोवा में समुंद्र के किनारे रेत पर लेटे हुए थे, तभी कुछ अंग्रेज बच्चे उनके पास आ गए और हर्षातिरेक से चिल्लाने लगे, 'Look Mumma Sainta Clause' मोहयाल होने का गर्व एवं मोहयाली संस्कार उन्हें विरासत में मिले थे। उनके पिता स. गोपाल सिंह दत्ता (मेरे नानाजी) वीरम दत्ता–मोहयालों के गाँव के रहने वाले थे जो पवित्र स्थान करतारपुर साहिब से 3 किलोमीटर की दूरी पर है जहाँ गुरू नानक देव अपनी चार यात्राएँ पूरी कर रहने लगे थे। स. गोपाल सिंह डेरा गाजी खान में ब्रिटिश फ़ौज में भरती हो गए। वह सशस्त्र घुड़सवार कम्पनी (Cavellery Regiment) में रिसालदार थे। उनके रिसाले का नाम था, 'मोहयाल रिसाला' जिसमें मुख्य रूप से मोहयाल होते थे। यह रिसाला अपनी बहादुरी एवं अनुशासन के लिए प्रसिद्ध था। ब्रिटिश फ़ौज की नौकरी से निवृत्त होकर वह डेरा गाज़ी खान से क्वेटा आ गए, जहाँ उन्होंने Construction Contractor का काम शुरू किया, सरदार गोपाल सिंह ने कबालाई पठानों एवं बिहड़ इलाकों के बीच से सिंध से लेकर बलोचिस्तान तक रेल मार्ग बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया जो रेल निर्माण के इतिहास में एक मिसाल है। मोहयाली शान एवं संस्कार क्या होता है इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मेरे नानाजी का स्वर्गवास 44 वर्ष की छोटी आयु में हो गया था। उन्होंने अपनी पत्नी भाईयाँ देवी जी जो पढ़ी लिखी नहीं थी, से अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की कि बच्चों को उच्च शिक्षा देनी है और वह भी समाज के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में।

आज से सौ वर्ष से भी अधिक पहले विधवा–नारी–विरोधी समाज में अपने अथक प्रयास एवं सूझ–बूझ से ना पढ़ी–लिखी पत्नी ने अपने पति को दिए गए वचन का पालन किया, उसका ज्वलंत प्रमाण है कि उनके बच्चों ने न केवल उच्च शिक्षा प्राप्त की अपितु समाज के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में उच्च पद पर भी रहेः–

1. सरदार बहादुर दिलदार सिंह दत्ता, आई.पी.एस (इंडियन पुलिस सर्विस)
2. स. राजेन्दर सिंह दत्ता, इंजीनियर यूएसए (1935)
3. अ. शिवचरण सिंह दत्ता, सिविल सर्जन
4. स. हरचरण सिंह दत्ता, माईनिंग इंजीनियर
5. स. गुरचरण सिंह दत्ता, हेड मास्टर
6. स. हरभजन सिंह दत्ता, कान्ट्रेक्टर
7. स. अवतार सिंह दत्ता, Head of Legal Department CBI

स. बहादुर को उनकी माँ ने कानून की पढ़ाई के लिए लाहौर से इलाहाबाद भेजा जहाँ एलएलबी करने के बाद उन्होंने यू.पी. के जिला फैजाबाद में ''पंडित दिलदार सिंह दत्त के नाम से वकालत करनी शुरू की। यहीं उनकी शादी बनारस के जमींदार सिन्हा परिवार में हुई, जो अपने को मोहयाल मानते थे। स. बहादुर के पिता के 44 वर्ष की आयु में आक्समिक निधन के बाद उन्हें वापिस लाहौर जाना पड़ा। वह पुलिस में भरती हो गए। उनकी पोस्टिंग उस समय के सबसे कठिन पठान कबालाई क्षेत्र बलोचिस्तान में पुलिस इंस्पेक्टर के पद पर हुई, जहाँ उन्होंने 1946 तक काम किया। उनका कर्त्तव्यनिष्ठा एवं Man of Principles होने के कारण पहले उन्हें सरदार साहिब और बाद में सरदार बहादुर के सम्मान से सम्मानित किया। उस समय मोहयालों में पुलिस या फौज में जाना सम्मान जनक एवं शान माना जाता था। 1946 में उनकी पोस्टिंग दिल्ली में पुलिस विभाग में एस.एस.पी दिल्ली के मुख्य पुलिस अधिकारी के रूप में की गई। सरदार बहादुर एवं पुलिस के अधिकारियों की टीम के सहयोग से 6 अप्रैल 1963 को सी.बी.आई की स्थापना हुई। वह दिल्ली में मोहयाल समाज में जाने–माने मोहयाल थे। वे लाहौर से मोहयाल समाज से जुड़े रहे और जीवन पर्यन्त मोहयाल पत्रिका के सदस्य रहे। उनकी बेटी एवं पत्नी की अकाल मृत्यु 1935 में क्वेटा में आए भीषण भूकंप में हो गई थी, जिसका उन्हें बहुत दुःख था पर उन्होंने जिंदगी से कभी हार नहीं मानी।

सरदार बहादुर की जीवनी के बारे में मानवीय पक्ष की रोचक जानकारी मुझे अपने आदरणीय जीजाजी डॉ. एन.एस दत्त जो Ivri Indian Veterinery

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

Research Institute मुक्तेश्वर से डायरेक्टर के पद से सेवानिवृत हुए से मिली। उन्होंने कैंब्रिज यूनिवर्सिटी लंदन से पी.एचडी की डिग्री हासिल की, बाद में पन्तनगर यूनिवर्सिटी के Dean of Veternery Science भी रहे और भारत की जानीमानी कंपनी वैफ के संस्थापक भी रहे। आज 90 वर्ष की आयु हो जाने पर भी उनमें मोहयाली जोश है और मोहयाली इतिहास की जानकारी ऐसे देते हैं मानो कल की बात हो। मेरी बहन दर्शन दत्ता सामाजिक कामों में निस्वार्थ भाव से जुड़ी है, ऐसे विलक्षण मोहयालों पर हमें गर्व है।

सरदार बहादुर के साथ अपना अनुभव डा. एन.एस. दत्त बताते हुए कहते हैं कि दिल्ली की एक सर्दभरी सुबह थी जब सरदार बहादुर अपने सबसे छोटे भाई अवतार सिंह दत्त (ACP CBI Legal Dept. ret.) से मिलने उनके घर आए। मैंने देखा कि वह केवल स्वेटर पहने हुए थे। मैंने उनसे पूछा कि इतनी कड़कड़ाती ठण्ड में उन्होंने कोट भी नहीं पहना हुआ? उन्होंने कहा कि जब वह घर से चले तो कोट पहनें हुए थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक भिखारी कमीज पजामे में फुटपाथ पर बैठा है। उन्होंने अपना कोट उतार कर भिखारी को दे दिया। डा. एन.एस. दत्त ने उनके इस दानकृत से आश्चर्य चकित होकर सरदार बहादुर से कहा कि आपने आना कीमती गर्म कोट उस भिखारी को दे दिया लेकिन हो सकता है कि वह उस कोट को बेच कर शराब पी ले और फिर पजामा–कमीज पहन कर फुटपाथ पर बैठ जाए। सरदार बहादुर का कहना था कि उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया, यह उस आदमी की इच्छा है कि वह बाद में किस प्रकार व्यवहार करता है।

सरदार बहादुर के प्रति लोगों के प्रेम, सम्मान एवं आत्मीयता के बारे में डा. एन.एस. दत्त ने एक दूसरा अनुभव बताया जो कि उन्हें उनके छोटे भाई अवतार सिंह ने बताया था। अपने बड़े भाई सरदार बहादुर के निधन का समाचार सुनकर वह अपनी पत्नी के साथ ईस्ट पटेल नगर से जंगपुरा पहुँचे। जहाँ सरदार बहादुर का पार्थिक शरीर रखा हुआ था। टैक्सी का किराया देने पर टैक्सी ड्राईवर ने पैसे लेने से मना कर दिया और कहने लगा कि, "सरदार बहादुर ने उसकी टैक्सी में कई बार सफर किया है। वह सदा किराये से अधिक पैसे ही नहीं समय–असमय उसकी मद्द भी किया करते थे। वह मेरे पिता समान थे। आप से पैसे कैसे ले सकता हूँ।" इसी प्रकार के कई अनुभव है जो उनके मानवीय पक्ष एवं त्रस्त लोगों के प्रति असीम संवेदना को प्रकट करते हैं।

कैसी विडम्बना है कि एक इंसान ब्रिटिश राज में पुलिस इंस्पेक्टर भर्ती होकर, भारत के भिन्न–भिन्न बड़े शहरों में सीनियर सुपरिटेंडेंट पुलिस के पद पर रहकर फिर सीबीआई के उच्चाधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुआ हो और संसार को अलविदा कहे तो उसका मकान भी न हो। मुझे आश्चर्य होता है सोचकर कि ऐसा व्यक्ति, बदनाम पुलिस विभाग में कभी रहा होगा। यू तो सरदार बहादुर शैरो–शायरी के शौकीन थे। पर वह एक शेर अक्सर सुनाया करते थेः–

लिखकर अल्लाह ने मेरी किस्मत में गरीबी।
कातिब से कहा, जाओ इसका मिजाज शहाना बना दो।।
सरदार बहादुर दिलदार सिंह दत्ता हमारे बीच नहीं है, बची है तो यादें और उनका अहसास।
उजाले अपनी यादों के मेरे पास रहने दो,
ना जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाए।।

-सरदार जी.एस. बाली, *पश्चिम विहार, नई दिल्ली*
मो. 9999003660

अश्रुओं भरी श्रद्धांजलि

राम और कृष्णा के आदेशो से शिक्षा लीजिए, सोचए क्या उनके आदर्शों को अपनाते हैं हम, कृष्णा की जो तालीम दुनिया में आम हो मादए–ए हिन्दुस्तान का सारे जहां में नाम हो। (जोश साहिब)

संसार में रह रहे मोहयाल वंश के लिए एक दिन आया जब हमारे पूज्य जी.एल. दत्ता 'जोश' इस नश्वर संसार को छोड़कर परलोक सिधार गए। यह न पूरा होने वाला हमारा नुकसान हुआ है। भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं कि यह मनुष्य शरीर बड़ा दुर्लभ है पर है नाश्वान। जोश जी उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी के बहुत बड़े लेखक थे। अभी अभी मेरे द्वारा लिखी पुस्तक "एतिहास दत्त वंश में चार लेख केवल जोश जी के हैं। वे अमर रहे हो?

जोश जी को अपने बेटे, पत्नी और बेटी का निधन सहना पड़ा। मैं कभी उनसे मिला नहीं, परन्तु उनको बड़ा भाई मान बैठा था। मेरी पत्नी के निधन पर मुझे पिता और बड़े भाई की तरह मेरा मार्ग दर्शन किया। जोश जी के 50 के लगभग पत्र मेरे पास हैं। अभी दो मास पहले उनका पत्र आया था।

मैं मोहयाल जगत व परिवारजन के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब को सबर दें और हम उनके आदर्शों पर चलें।

-भाई वेद व्यास दत्ता *वीरमशाही, मेंढर पूंछ (जम्मू–कश्मीर)*

पानी बचाओ

पानी एक ऐसी चीज है, जिसके बिना हम जिंदा नहीं रह सकते हैं। आजकल तो पानी बोतलों में बिकने भी लगा है। फिर भी मुझे अक्सर घर देखकर हैरानी होती है कि लोग बड़ी बेदर्दी से पानी को बहा रहे हैं, कैसे? मैं बताता हूँ:

1. हर राजे पानी कि टंकी लीक होती रहती है, लेकिन लोग परवाह ही नहीं करते।
2. स्कूटर और कार पर कितने ही लीटर पानी बहा देते हैं।
3. रोज टूथ ब्रश करते हुए नल खुला रहता हैं।
4. घर के बाहर पाइप से पानी बहाते रहते हैं, जिसकी जरूरत नहीं।
5. घर की नौकरानी घर की फर्श पर पाइप से पानी बहाती रहती हैं।
6. लोग गर्मी में ठंड पानी से कितनी देर तक नहाते ही रहते हैं और सर्दी में गर्म पानी से, क्योंकि ऐसा उन्हें अच्छा लगता है।
7. पानी की टूटी खुली रहती है, और खुद टेलीविजन देखते रहते हैं।
8. बच्चे बाथरूम में नल खोल कर खेलते रहते हैं और माँ–बाप खुश होते रहते हैं।

भाईओ याद रखना अगर हमने पानी को न संभाला तो हमें इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगें।

-अमन बक्शी, *लुधियाना (मो.) 9914444711*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor